7

नन्हे-मुन्ने अनुभव

अक्षय कुमार दीक्षित*

जब कोई बच्चा पहली बार स्कूल में आता है तो उसके मन में कौन-कौन सी बातें चल रही होंगी, यह जानना आसान नहीं है। यह समझना भी उतना ही टेढ़ा है कि स्कूल में नन्हे-मुन्ने बच्चों से ऐसे कौन-कौन से कार्य और गतिविधियाँ करवाई जाएँ कि उन्हें पता भी न चले कि उन्हें पढ़ाया जा रहा है और वे मज़े-मज़े में पढ़ना-लिखना सीख जाएँ। बच्चों के मन की बातों को जानना-समझना प्रत्येक शिक्षक की सबसे बड़ी जिज्ञासा होती है। इसी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास है यह लेख, जो एक बच्चे की स्वयं से या किसी दूसरे 'अपने' से बातचीत के रूप में है। यह बच्चा आपकी कक्षा का हो सकता है, पड़ोस का कोई बच्चा हो सकता है या आपके घर का भी हो सकता है। जिस किसी से वह बात कर रहा है, वह उसका दोस्त, माँ या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है, जिससे बात करना उसे अच्छा लगता हो। बातचीत सच्ची भी हो सकती है और सच्चाई पर आधारित भी, परंतु इसे पढ़कर आपको उस रास्ते का संकेत अवश्य मिलेगा जिसपर चलकर आप बच्चों के पढ़ने-पढ़ाने की शुरुआत कर सकेंगे।

* *शिक्षा सलाहकार,* सी-633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, नयी दिल्ली

1 अप्रैल — आज पिताजी ने स्कूल में मेरा दाखिला करवाया। क्लास के एक-दो बच्चों को मैं जानती हूँ। दीदी ने मेरा नाम पूछा। मैंने नाम बताया तो उन्होंने 'शाबाश' कहा। मुझे अच्छा तो लगा, लेकिन नाम बताने पर शाबाश कहने की क्या ज़रूरत है? मैं तो बहुत से और लोगों को भी अपना नाम बताती हूँ। कोई शाबाश नहीं कहता! बाद में दीदी ने एक गाना गाया। पीछे-पीछे हमने भी गाया। फिर दीदी सारे बच्चों को मैदान में ले गईं और हम सबने गोलघेरा बनाकर एक खेल खेला। मुझे अच्छा लगा।

5 अप्रैल — दीदी रोज़ अच्छे-अच्छे गाने करवाती हैं। हमसे बहुत सारी बातें करती हैं और खूब हँसाती हैं। मीनू तो कह रही थी कि स्कूल में खूब सारा काम करवाते हैं, खूब पिटाई होती है। बिलकुल झूठी है वो। दीदी तो बस खेल ही करवाती हैं। कहानी भी सुनाती हैं। उन्हें तो बहुत सारी कहानी याद हैं, अम्मा से भी ज़्यादा! पर मुझे जादूगर वाली कहानी अच्छी लगी।

7 अप्रैल — आज दीदी ने पूछा, "कौन-सी कहानी सुनोगे?" तो मैंने झट से कहा, "जादूगर

October 2016.indd 34 8/16/2017 3:36:57 PM

वाली!'' तो दीदी ने कहा, ''जानती हो, जादूगर का नाम क्या है? जादूगर का नाम भी तो पलक है न!'' फिर दीदी ने ब्लैकबोर्ड पर मेरा नाम मुझसे ही लिखवाया। मुझे मेरा नाम लिखना आता है। फिर दीदी ने पूछा, ''किस-किस बच्चे के नाम में 'प' जैसी आवाज़ आती है?'' पाँच-छह बच्चे खड़े हो गए। फिर दीदी ने उन बच्चों से भी कहा कि वे अपने नाम ब्लैकबोर्ड पर लिख दें। जिन बच्चों को अपने नाम लिखने नहीं आते थे, दीदी ने उनके नाम ब्लैकबोर्ड पर खुद लिख दिए। फिर दीदी ने पूछा, ''किन-किन चीज़ों के नाम में 'प' आता है?'' हमने तो खूब सारे नाम बता दिए। तीन नाम मैंने बताए — 'पतंग', 'पानी', 'पीला'। दीदी खूब खुश हुईं।

8 अप्रैल — आज दीदी ने बताया कि 'प' कैसे लिखते हैं। पता नहीं क्यों! कल तो इतनी बार प-प-प किया था! शायद कजरी जैसे बच्चों के लिए बताया होगा। वह कल कह रही थी कि उसे पता नहीं चला कि 'प' कैसे लिखते हैं। शायद कल उसका ध्यान कहीं और होगा।

9 अप्रैल — आज दीदी ने एक पहेली पूछी, ''सर-सर-सर उड़ती हूँ, धागे के संग चलती हूँ।'' मुझे इसका जवाब आया ही नहीं। जमना ने बताया, 'पतंग!' दीदी ने हमें कॉपी में पतंग बनाने को कहा। दो बच्चों के पास कॉपी नहीं थी। उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर पतंग बनाई। दीदी ने पतंगों के नीचे कुछ लिख दिया। फिर अँगुली रखकर पढ़ा — यह पतंग है। फिर हम सबने एक खेल खेला। हम अपनी पसंद की किसी भी चीज़ या बच्चे को हाथ लगाते और कहते, ''यह मेज है, यह सतीश है, यह पेंसिल है।'' बड़ा मज़ा आया।

10 अप्रैल — आज दीदी ने फिर मुझे ब्लैकबोर्ड पर अपना नाम लिखने के लिए कहा। इस बार उन्होंने नाम के पीछे वाले हिस्से पर एक घेरा लगाया और आगे वाले हिस्से पर भी घेरा लगा दिया। फिर बोलीं — ''पलक के नाम के तीन टुकड़े हो सकते हैं। प ल क। फिर उन्होंने अँगुली रखकर पढ़ा, 'पलक'। अब वे बच्चे ब्लैकबोर्ड पर अपने नाम लिखें जिनके नाम में 'क' आता है।'' छह बच्चे सामने आ गए। काकू बैठी रही। जबकि उसके नाम में तो दो बार 'क' आता है। मैंने उससे कहा, ''अरे, तू भी जा ना।'' वह बोली, ''मुझे अपना नाम लिखना नहीं आता।''

मैंने कहा, ''अरे, दीदी बता देंगी। तू याद कर लियो।'' दीदी ने सुन लिया। उन्होंने कहा, ''हाँ, मैं बता दूँगी। पर देखो, मैं रोज़-रोज़ कब तक बताऊँगी। अपना नाम लिखना सीख लेना।'' काकू को सचमुच अपना नाम लिखना आ गया है।

11 अप्रैल — दीदी ने आज पानी वाली कविता सुनाई। पानी से खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है, पर मम्मी खेलने ही नहीं देती। कविता की एक लाइन बोलने में सारे बच्चे गड़बड़ कर रहे थे और हँस रहे थे —

पानी-पानी, पीना पानी
पीना पानी, पूरा पानी

सबको अच्छा लग रहा था। दीदी ने बताया कि पानी और पीना कैसे लिखते हैं। दोनों एक जैसे लगते हैं।

12 अप्रैल — आज हमने अपने पास बैठे बच्चों के नाम अपनी कॉपी पर लिखे। दीदी ने एक किताब में से पढ़कर एक कहानी सुनाई। हमें किताब के चित्र भी दिखाए। मुझे वह किताब बहुत पसंद आई। दीदी ने कहा है कि वे कल हम सबको वैसी ही किताब देंगी। मैं कल ज़रूर स्कूल आऊँगी।

October 2016.indd 35 8/16/2017 3:36:57 PM

15 अप्रैल — दीदी ने आज एक कहानी सुनाई, फिर ब्लैकबोर्ड पर उसे लिख दिया। वे लिखती-लिखती उसे पढ़ती भी जा रही थीं। उन्होंने चंचल से कहा, ''चंचल, ब्लैकबोर्ड पर जहाँ-जहाँ 'च' लिखा है, उसे मिटा दो।'' चंचल ने सारे 'च' मिटा दिए। अब दीदी ने कहा, ''पलक, चंचल ने जहाँ-जहाँ 'च' मिटाया है, वहाँ-वहाँ 'प' लिख दो।'' मैंने फटाफट 'च' की जगह 'प' लिख दिया। अब दीदी ने कहानी फिर से पढ़ी। हमारा तो हँस-हँस कर बुरा हाल हो गया। थोड़ा-थोड़ा याद है — "पुहिया रास्ते पर पल रही थी। अपानक पूहा बोला, "देख, आसमान में पील उड़ रही है।"

16 अप्रैल — आज दीदी ने एक मज़ेदार गाना अपने मोबाइल पर चलाकर सुनाया —

'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए।
बाकी जो बचा था, काले चोर ले गए।'

हम बिना कहे ही साथ साथ गाने लगे। फिर हमने एक खेल खेला। दीदी ने थोड़ी पर्चियाँ मेज़ पर रख दीं और सारे बच्चों से एक-एक पर्ची उठाने के लिए कहा। फिर बोलीं, ''जिसकी पर्ची में नानी लिखा है, वे बच्चे नानी बनेंगे, जिनकी पर्ची में मोर लिखा है, वे बच्चे मोर हैं। अब नानी सोने की एक्टिंग करेंगी। सारे मोर बिना नानी को जगाए क्लास से बाहर चले जाएँगे। अगर नानी जाग गईं तो मोरों को पकड़ लेंगी।'' हम साँस रोककर बाहर जाने लगे पर नानी को पता चल गया। उसने हमें पकड़ लिया। हम उछल-उछल कर हँसने लगे।

18 अप्रैल — आज दीदी ने ब्लैकबोर्ड पर 'न', 'च', 'प', 'व', 'क', 'ल' लिख दिया। मुझे और मेरे दोस्तों ने सोचा कि दीदी अब कहेंगी कि जिनके नाम में ये अक्षर आते हैं, वे सामने आ जाओ। पर दीदी ने यह नहीं कहा। दीदी ने कहा, "इन अक्षरों को मिलाकर जितने शब्द बना सकते हो, बनाओ।" सारे बच्चे चुपचाप उन्हें ताकने लगे। कुछ समझ में नहीं आया। फिर दीदी ने कहा, "देखो, 'प' और 'क' मिला तो बना — 'पक'। ऐसे ही मिला-मिलाकर बहुत सारे नाम बनेंगे। देखें, कौन सबसे ज़्यादा नाम बनाता है।"

मैंने बनाया 'चप', शीलू ने बनाया 'वन', बबलू ने बनाया 'कल'। फिर हम सबने अपने बनाए हुए नाम कॉपी में लिख लिए।

दीदी ने बताया, "लिखते समय लाइन सीधे रखते हैं तो लिखाई अच्छी लगती है।" मैं भी ऐसा ही लिखना सीखूँगी।

19 अप्रैल — आज मुझे चाचा के घर जाना था। मम्मी ने कहा — "स्कूल मत जा।" मुझे अच्छा तो नहीं लगा, पर क्या करती!

20 अप्रैल — बबलू ने बताया कि दीदी ने कल एक मज़ेदार खेल करवाया था। सारे बच्चे मैदान में से एक चीज़ उठाकर लाए थे। हर बच्चा जो चीज़ लाता था, वह उसके बारे में एक बात बताता था। फिर बाकी बच्चों ने अंदाज़ा लगाकर बताया कि वह चीज़ क्या होगी। उसके बाद उस चीज़ का नाम ब्लैकबोर्ड पर लिख देते।

28 अप्रैल — आज दीदी ने एक कहानी सुनाई, "बबली को गाजर का हलवा बड़ा पसंद था। वह बाज़ार से गाजर लाई। उसने गाजर काटी। चीनी मिलाई। बड़ी देर तक पकाया और हलवा बन गया। उसने सबको खिलाया।" फिर दीदी ने कहा, "अपनी कॉपी पर कहानी

October 2016.indd 36 8/16/2017 3:36:57 PM

को लिख लो।" मैं परेशान हो गई और सोचने लगी कि कहानी कैसे लिखूँ? दीदी समझ गईं कि मुझे कहानी लिखने में परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा, "चलो, मैं बोलती हूँ, तुम लिखो। ब-ब-ली, बबली"। बबली लिखना तो मुझे आता था, गाजर का पता नहीं था। दीदी की मदद से मैंने गाजर भी लिख लिया। धीरे-धीरे कहानी पूरी हो गई। दीदी को दिखाया तो दीदी बहुत खुश हुईं। शाबाश कहा और कॉपी पर सितारा बना दिया। दीदी जब बहुत खुश होती हैं तो सितारा बनाती हैं।

मैंने घर आकर बड़ी बहन को कॉपी दिखाई तो वे बोलीं, "अरे, इतनी गलतियाँ की हैं! फिर भी दीदी ने सितारा बना दिया! दीदी ध्यान से नहीं देखतीं क्या?" मैं उदास हो गई। तभी माँ बोली, ''अरे, पलक ने पहली बार इतनी अच्छी कहानी लिखी है, इसलिए दीदी ने सितारा बनाया है। गलत-सही तो बाद की बात है, पहली बात तो यह है कि लिखा क्या है। देखूँ तो सही, क्या लिखा है पलक ने!'' माँ ने कॉपी देखी तो वे भी बहुत खुश हुईं। उस दिन माँ ने सचमुच गाजर का हलवा बनाया।

7 जुलाई — आज दीदी ने एक मज़ेदार खेल खिलाया। उन्होंने हमें पाँच टोलियों में बिठा दिया। हर टोली को एक-एक कार्ड दिया जिसमें पाँच नाम लिखे थे। उन्होंने चार दीवारों पर चार कार्ड लगा दिए। हर कार्ड पर आठ नाम लिखे थे। दीदी ने कहा, ''हर टोली को दस नाम पूरे करने हैं। बाकी के नाम देखने के लिए एक टोली में से एक बार में एक बच्चा उठकर दीवार तक जाएगा और वापस आकर अपनी टोली को नाम बताएगा। बाकी बच्चे उस नाम को लिखने में मदद करेंगे। जो टोली सबसे पहले ठीक-ठीक दस नाम पूरे कर लेगी, वह टोली जीत जाएगी। हम उछल-उछल कर काम करने लगे। एक बार में एक टोली से एक बच्चा जाता, कभी नाम भूल जाता तो वापस मुड़ जाता। हम नाम लिखने में अपनी टोली के एक साथी की मदद कर रहे थे। हमने उसे ही कहा था सारे नाम लिखने के लिए। कभी-कभी ऐसा भी होता कि जो नाम कोई बच्चा पढ़कर आता, वह हम पहले से ही लिख चुके होते। इसलिए थोड़ा ज़्यादा समय लग रहा था। अचानक एक टोली चिल्लाई — ''हमारे दस नाम पूरे हो गए, दीदी!'' हम फिर भी अपने नाम पूरे करते गए।

14 जुलाई — आज दीदी ने ब्लैकबोर्ड पर एक पहेली बनाई।

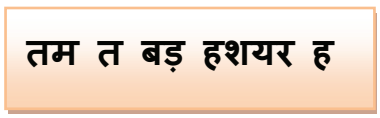

पहला डिब्बा

दूसरा डिब्बा

दीदी ने कहा, "ये डिब्बे अपनी-अपनी कॉपी में बना लो।"

पहेली ये थी कि दूसरे डिब्बे की मात्राओं को पहले डिब्बे के शब्दों में सही जगह पर लगाना था। मात्राओं को जितनी बार चाहे लगा सकते थे। पहले डिब्बे में जो बात लिखी है, जो बच्चा सबसे पहले उसे ठीक करके बता देगा, वह जीत जाएगा। सुमन ने सबसे पहले बता दिया। मैं बस आधा ही कर पाई थी। दीदी ने कहा, "कल फिर से खेलेंगे।" सुमन के लिए सबने तालियाँ बजाईं।

October 2016.indd 37 8/16/2017 3:36:58 PM

18 जुलाई — आज दीदी ने फिर से ब्लैकबोर्ड पर दो डिब्बे बनाए।

बहत असन पहल ह

पहला डिब्बा

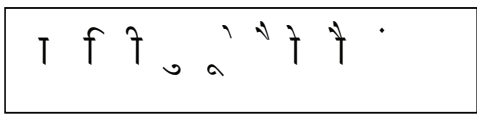

दूसरा डिब्बा

आज तो दूसरे डिब्बे में सारी मात्राएँ भरी पड़ी हैं। मैं समझ गई। दीदी ने पहले से ज़्यादा मुश्किल पहेली दी है। अब तो ज़्यादा दिमाग लगाना पड़ेगा! यह सोचकर मैंने पहले ह पर मात्रा लगाई। 'असन' से तो 'आसान' बन सकता है। 'पहल' से 'पहले', 'पहली', 'पहेली' बनती हैं और 'बहत' तो है 'बहुत'। तो आज सबसे पहले मैंने हाथ खड़ा किया। दीदी ने मेरे लिए ताली बजवाई। जब दीदी हँसकर शाबाश कहती हैं तो बहुत अच्छा लगता है। आज तो उन्होंने कहा, "पलक, तुम तो पढ़ना-लिखना सीख गई हो। बधाई।"

इसके बाद छुट्टी हो गई। मैं बहुत खुश थी, लेकिन मुझे पता था, मुझे अभी भी बहुत कुछ समझना है।

October 2016.indd 38 8/16/2017 3:36:58 PM